Course-Neo Classical Theories

Unit-4-Exchange Theory(peter Blau)

Scanned with CamScanner

संरचनात्मक विनिमय सिद्धान्तः पीटर ब्लॉ
(Structural Exchange Theory: Peter Blau)

लगभग पिछले तीन दशकों में पीटर ब्लॉ ने विनिमय सिद्धान्त के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। सबसे पहली बार उन्होंने इस सिद्धान्त की रूपरेखा अपनी पुस्तक *एक्सचेंज एण्ड पावर इन सोशल लाइफ* (Exchange and Power in Social Life, 1964) में रखी। उनके सिद्धान्त के कई क्षितिज है, फिर भी सार रूप में वे यही करना चाहते हैं कि विनिमय के साथ शक्ति (Power) की अवधारणा बराबर जुड़ी होती है। एक तरह से होमन्स ने विनिमय सिद्धान्त को जहां रखा वहां से आगे बढ़ाने का काम पीटर ब्लॉ ने किया। होमन्स की रूचि निगमनात्मक सिद्धान्त बनाने में थी। उन्होंने गली-कूचें में छोटे-छोटे अनौपचारिक समूहों का अध्ययन किया और इसके आधार पर निगमनात्मक सिद्धान्त बनाया। पीटर ब्लॉ ने गली-कूचे से बाहर निकल कर वृहद् और जटिल समाज में प्रवेश किया और सामाजिक संरचना को अपने सिद्धान्त की अध्ययन सामग्री बनाया।

जहाँ होमन्स व्यक्तियों के बीच में होने वाले सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं, सम्बन्धों के पीछे जो कुछ मनोविज्ञान है उसका विश्लेषण करते हैं, वहाँ पीटर ब्लॉ का अध्ययन सामाजिक संरचना पर केन्द्रित है। सामाजिक संरचना की समस्या को ब्लॉ ने सामाजिक विनिमय सिद्धान्त में देखा। वे संरचना की समस्या को अपनी बाद की कृतियों में भी देखते हैं और अन्य समाजशास्त्रियों से हटकर ब्लॉ सामाजिक संरचना की व्याख्या करते हैं:

सामाजिक संरचना वह है जिसमें लोगों की सामाजिक भूमिकाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं तथा यह भिन्नता धंधों, आय, जाति, प्रजाति, आदि में देखने को मिलती है। सामाजिक संरचना में विशेष व्यक्तियों के व्यवसाय व धंधे नहीं देखे जाते बल्कि यह देखा जाता

Scanned with CamScanner

है कि धंधों की भिन्नता के कारण सम्पूर्ण संरचना में आय की गैर बराबरी हो जाती है। किस व्यक्ति को कितनी आय होती है, कौनसा व्यक्ति किस व्यवसाय को करता है, यह सब ब्लॉ के अनुसार सामाजिक संरचना में कोई मतलब नहीं रखता। आय के कम या ज्यादा होने से व्यक्ति किस वर्ग या समूह में आता है, यह बात विशेष महत्व रखती है। ब्लॉ व्यक्तियों की आय में रूचि नहीं रखते। उनकी रूचि को सामाजिक संरचना के आय सम्बन्धी समूहों से है और यहीं पर ब्लॉ विनिमय सिद्धान्तवेत्ता होमन्स से भिन्न है। होमन्स के जो भी बुनियादी प्रस्ताव है, जिनमें वे सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करते हैं, सभी मनोवैज्ञानिक है। इस तरह का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ब्लॉ को अस्वीकार है। उनका आरोप है कि सभी विनिमय व्यवहारों को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखना *लघुकरण* (Reduction) मात्र है। होमन्स का पुरजोर विरोध करने के बाद भी ब्लॉ इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि छोटे समूहों में होने वाली अन्तःक्रियाओं का अध्ययन वृहद् समूहों व समाजों के अध्ययन में बहुत महत्वपूर्ण है। इसी कारण कई बार यह कहा जाता है कि जहां होमन्स ने छोड़ा, वहीं से पीटर ब्लॉ ने शुरू किया। तात्पर्य कि होमन्स ने विनिमय सिद्धान्त का क्षेत्र छोटे समूहों के अध्ययन तक ही सीमित रखा था, उसे ब्लॉ विशाल और जटिल समाजों के अध्ययन तक ले गये। ब्लॉ की यह निश्चित धारणा थी कि विनिमय संदर्श में इतनी क्षमता है कि हम बाद में चलकर निगमनात्मक नियमों का निर्माण कर सकते हैं। होमन्स ने अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों तक विनिमय सिद्धान्त को प्रस्तुत किया था, पर पीटर ब्लॉ ने इन सम्बन्धों को समूहों व राष्ट्रों और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खड़ा कर दिया।

मर्टन ने एक जगह पर कहा है कि ज्ञान को बढ़ाना, उसे नये क्षितिज देना, एक सृजनकारी कार्य है। ज्ञान की प्रकृति संचयी होती है। कोई भी एक सिद्धान्तवेत्ता और इस अर्थ में विज्ञान वेता केवल अपने पाँवों के बल पर ही खड़ा नहीं होता। अतीत में जो भी अध्ययन हुए है उनके आधार पर वह नया अनुसंधान करता है। हर विज्ञानवेत्ता अपने पूर्ववर्ती विज्ञानवेत्ताओं के कंधों पर खड़ा होता है। पीटर ब्लॉ ने विनिमय सिद्धान्त के निर्माण में कई स्रोतों से, जो भी उन्हें उपयोगी लगे बेबाक होकर ग्रहण कर लिया।

होमन्स के विनिमय सिद्धान्त के मुख्य रूप से दो स्रोत हैं: प्रकार्यात्मक और द्वन्द्वात्मक संघर्ष। जहाँ फ्रेजर अर्थशास्त्र के उपयोगितावाद को चचेरे-ममेरे भाई-बहिनों के विवाह के विश्लेषण में काम में लाते हैं, मेलिनोस्की विनिमय का विश्लेषण मनोवैज्ञानिक संदर्श से करते हैं, मॉस और लेवी - स्ट्रॉस समूह या समाज के संदर्भ में व्याख्या करते हैं, वहाँ पीटर ब्लॉ विशुद्ध रूप से सामाजिक संरचना को अपना संदर्श बनाकर विनिमय सिद्धान्त की व्याख्या करते हैं।

Scanned with CamScanner

पीटर ब्लॉ की सैद्धान्तिक रणनीति

होमन्स की सैद्धान्तिक रणनीति निगमनात्मक विश्लेषण था। ब्लॉ कुछ और करते हैं। उन्होंने एक सैद्धान्तिक रूपरेखा प्रस्तुत की और उसे *सैद्धान्तिक प्राक्कथन* (Theoretical Prolegomenon) नाम दिया है। यह प्राक्कथन अवधारणाओं की एक लम्बी चौड़ी रूपरेखा है। इन प्राक्कथनों पर टिप्पणी करते हुये टर्नर कहते हैं कि ब्लॉ की सैद्धान्तीकरण की प्रक्रिया बहुत कुछ टालकट पारसंस से मेल खाती है। ब्लॉ कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं को परिभाषित करते हैं और ऐसा विश्वास करते हैं कि ये अवधारणाएं सामाजिक संगठन में होने वाली प्रक्रियाओं के विश्लेषण में सहायक होगी। यह ठीक है कि पारसंस ने जिस सफाई के साथ अवधारणाओं को वर्गीकृत किया है वैसा ब्लॉ ने नहीं किया। इस अभाव के होते हुये भी *ब्लॉ ने विभिन्न अवधारणाओं* और प्रस्तावों की एक ऐसी गठरी बनायी है जिसकी सहायता से समाजशास्त्रीय प्रक्रियाओं को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। अवधारणाओं की यह गठरी इतनी सशक्त है कि इसके माध्यम से व्यक्तियों के व्यवहार को एक छोटे से छोटे समूह से लेकर विशाल समाजों तक को समझा जा सकता है। वैसे समाजशास्त्र में कई सिद्धान्त हैं, लेकिन यदि विनिमय सिद्धान्त को सुचारू रूप से चलाया गया तो हम परिपक्व अवस्था में आने पर किसी व्यवस्थित और *स्वंय सिद्ध* (Axiomatic) सिद्धान्त को बना सकते हैं। यद्यपि इस तरह की अवधारणाओं को वे नहीं बना सके जिनके माध्यम से किसी स्वंय सिद्ध सिद्धान्त का निर्माण हो सके। इन कमियों के होते हुये भी ब्लॉ ने निगमनात्मक उपागम को थोड़ा बहुत विकसित अवश्य किया।

जब हम ब्लॉ की सिद्धान्त निर्माण की रणनीति को देखते हैं तो बहुत स्पष्ट है कि वे *विनिमय से जुड़ी हुयी अवधारणाओं को एक बंडल में रखते हैं। इसके बाद इन विनिमय की अवधारणाओं के माध्यम से वे सूक्ष्म (Micro) और वृहद् (Macro) के बीच जो खाई है उसे जोड़ते हैं। उनका दृढ़ विचार रहा है कि विनिमय के एक ही फ्रेमवर्क (चौखटे) द्वारा व्यक्ति सम्बन्धी अन्तःक्रियाओं और संरचनात्मक सम्बन्धों का विश्लेषण किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में सूक्ष्म और वृहद् दोनों को जोड़कर देखने का काम विनिमय सिद्धान्त द्वारा किया जा सकता है।*

पीटर ब्लॉ ने अपनी पुस्तक एक्सचेंज एण्ड पावर इन सोशल लाइफ में कुछ ऐसे प्रयोग किये हैं। वे एक ऐसी रूपरेखा बनाते हैं जिनमें छोटे समूहों में होने वाली विनिमय की प्रक्रियाओं का सम्मिलित स्वरूप देखने को मिलता है। छोटे समूहों की अन्तःक्रियाओं से बने इन विनिमय नियमों को वे विशाल समूहों की विनिमय की प्रक्रियाओं के साथ जोड़ते हैं। पहले तो वे सामाजिक विनिमय के प्रत्यक्ष और रूबरू होने वाले प्रारम्भिक समूहों को बनाते हैं और फिर वे उसे बड़ी संस्थाओं पर लागू करते हैं। जहां होमन्स विनिमय के प्रारम्भिक स्वरूपों को छोटे समहों तक लाकर छोड़ देते हैं, वहाँ ब्लॉ उन्हें जटिल समाजों पर लागू करते हैं। संक्षेप में यही पीटर ब्लॉ की सैद्धान्तीकरण की सुनियोजित योजना है। यहीं पीटर ब्लॉ

Scanned with CamScanner

...सों से भी भिन्न है। पारसंस *सोशल सिस्टम* (Social System, 1951) में प्रक्रियाओं ...का विश्लेषण संस्थाओं तक ही सीमित रखते हैं, जबकि ब्लॉ बुनियादी अन्तःक्रियाओं की ...प्रक्रियाओं का अध्ययन ठेठ छोटे समूहों से लेकर विशाल समूहों तक करते हैं।

...विनिमय के बुनियादी नियम

...होमन्स ने विनिमय के प्रयुक्त चरों को विस्तृत रूप से परिभाषित किया है। ब्लॉ ऐसा कुछ नहीं करते। उनके चर बराबर अपरिभाषित रहते हैं। ब्लॉ वास्तव में चरों को परिभाषित करने की अपेक्षा विनिमय की प्रक्रिया पर ही जोर देते हैं। *वे केवल उन्हीं क्रियाओं का विश्लेषण करते हैं जिनसे व्यक्ति को कुछ लाभ होता है। व्यक्ति की कोई क्रिया* जो *किसी तरह का लाभ नहीं देती, ब्लॉ उसका उल्लेख भी नहीं करते*। थोड़े में, वे उन्हीं क्रियाओं को विनिमय के घेरे में रखते हैं जिनसे व्यक्ति को लाभ होता है। एक जगह पर ब्लॉ कहते हैं कि विनिमय गतिविधियां वे हो हैं जिनका अभिस्थापन विशेष लक्ष्यों या लाभ को प्राप्त करने के लिये होता है। उनका तर्क है कि कर्ता ऐसा मूर्ख नहीं है कि वह उन क्रियाओं को करे जिनसे उसे कोई लाभ न मिले। अतः वह अपनी क्रियाओं की *लागत* (Cost) को देखकर ऐसे सशक्त विकल्पों को अपनाता है जिनसे उसे लाभ प्राप्त हो सके। अतः कर्ता सबसे पहले लाभ देखता है, विकल्पों में से आशाप्रद विकल्प उठाता है और अपनी लागत से अधिक लाभ लेने के लिये क्रिया करता है। ऐसा करने में ब्लॉ विनिमय क्रिया की सभी अवधारणाओं उद्दीपन, क्रिया, लागत, मूल्य, अपेक्षा—आदि को प्रयोग में लाते हैं।

ब्लॉ के अनुसार सामाजिक जीवन एक बाजार की तरह है जिसमें विभिन्न कर्ता यानि उपभोक्ता एक दूसरे से विनिमय करते हैं और इस बात की कोशिश करते हैं कि उन्हें अपने विनिमय से कोई न कोई लाभ अवश्य मिले। जब व्यक्ति विनिमय करता है तब उसका उद्देश्य किसी एक विशेष लक्ष्य को प्राप्त करना नहीं होता। उसे जो भी और जैसा भी लाभ मिल जाता है, ले लेता है। इसके अतिरिक्त उसे लाभ के अन्य विकल्पों की जानकारी भी नहीं होती।

सब मिलाकर पीटर ब्लॉ ने विनिमय के बुनियादी नियमों में कहा है कि व्यक्ति जब दूसरों के साथ व्यवहार करता है, तब वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी न किसी लाभ को अवश्य लेना चाहता है। इस लाभ के लिये जो भी लागत उसे चुकानी होती है, चुका देता है। इन नियमों को ब्लॉ विनिमय के स्वंय सिद्ध सिद्धान्तों का रूप नहीं दे पाये। फिर भी विनिमय के जो कुछ नियम उन्होंने बनाये, उन्हें हम प्रस्तुत करते हैं:

1. *विवेकपूर्ण नियम* (Rationality Principle): एक दूसरे से व्यक्ति जितना अधिक लाभ लेना चाहते हैं, उतना ही अधिक वे लाभ देने वाली गतिविधि का अनुकरण करते हैं।
2. *पारस्परिकता नियम* (Reciprocity Principle): 'विनिमय में लोगों को दूसरों से

Scanned with CamScanner

जितना अधिक लाभ मिलता है, उतना ही अधिक वे लाभ देने वाले ... व्यवहार को दूसरों के साथ करते हैं। इसी तरह जब किसी विनिमय सम्बन्ध ... दूसरों के आभार की उपेक्षा की जाती है तो दूसरे भी इसी तरह की उपेक्षा ... को दण्डित करते हैं।

3. *न्याय नियम* (Justice Principle): जितना अधिक विनिमय व्यवहार समूह ... में स्थापित हो जाता है, उतना ही अधिक यह विनिमय व्यवहार सामान्य ... नियमों द्वारा नियंत्रित होता है। इसी भांति समाज के विनिमय नियमों की ... अधिक उपेक्षा होती है, उतनी ही अधिक उपेक्षा करने वालों की निन्दा की जाती है।

4. *सीमान्त उपयोगिता नियम* (Marginal Utility Principle): किसी एक ... गतिविधि से जितना अधिक अपेक्षित लाभ होता है उतनी ही कम मूल्यवान ... गतिविधि हो जाती है। ऐसी गतिविधि को करना भी लोग कम कर देते हैं।

5. *असंतुलन नियम* (Imbalance Principle): जितने अधिक विनिमय सम्बन्ध ... व संतुलित होगें उतने ही अधिक अन्य विनिमय व्यवहार असंतुलित व अस्थायी ...

ऊपर हमने ब्लॉ द्वारा दिये गये विनिमय के बुनियादी नियमों का उल्लेख किया। अब हम तात्विक रूप से यह देखेंगे की ब्लॉ के विनिमय सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएं ... है—

विनिमय सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएं

(Major Characteristics of Exchange Theory)

पीटर ब्लॉ ने विनिमय सिद्धान्त की जिन विशेषताओं को रखा है उनका आधार ... नौकरशाही का आनुभविक अध्ययन है। स्वंय क्षेत्र में रहकर ब्लॉ ने नौकरशाही ... गतिविधियों का अध्ययन किया है। इन आनुभविक प्राप्तियों के अतिरिक्त उन्होंने ... सिद्धान्तवेत्ताओ के विनिमय सिद्धान्त से भी बहुत कुछ उधार लिया है। वे वेबर ... दफ्तरशाही के प्रारूप से भी प्रभावित थे। उन्होंने डेहरेन्डार्फ के द्वन्द्वात्मक संघर्ष सिद्धान्त ... भी बहुत कुछ सीखा है। यह हम पुनः दोहरायेगें कि *ब्लॉ के विनिमय सिद्धान्त का ... संदर्भ सामाजिक संरचना है। यह सामाजिक संरचना ही है जो विनिमय सम्बन्धों ... होती है, सशक्त होती है। यहाँ हम यह भी कहेगें कि ब्लॉ अर्थशास्त्रियों के उपयोगितावाद, मेलिनोस्की के वैयक्तिक मनोविज्ञान, और होमन्स के व्यवहारवादी मनोविज्ञान ... असहमत है। विनिमय सिद्धान्त के क्षेत्र में उनकी निकटता मार्शल मॉस और लेवी ... है। ये तीनों विनिमय सिद्धान्तवेत्ता बुनियादी रूप से संरचनात्मक विनिमय सिद्धान्तवेत्ता हैं।* हमने पिछले अध्याय में यह कहा है कि विनिमय सिद्धान्त की दो प्रमुख धाराएं ... मनोवैज्ञानिक और संरचनात्मक। पिछले अध्याय में हमने मनोवैज्ञानिक धारा के ... होमन्स के विनिमय सिद्धान्तों की चर्चा की है और इस अध्याय में संरचनात्मक धारा ... प्रतिनिधि पीटर ब्लॉ का विवरण दे रहे हैं।

Scanned with CamScanner

ब्लॉ के विनिमय सिद्धान्त के लक्षण निम्न प्रकार है:

(1) विनिमय और सामाजिक एकीकरण:

सभी मानवशास्त्रियों ने, चाहे वे मेलिनोस्की, मार्शल मॉस, लेवी स्ट्रॉस, और कुछ अर्थों में होमन्स हों, यह स्वीकार किया है कि विनिमय का बहुत बड़ा कार्य समाज में सामाजिक एकीकरण लाना है। चाहे स्थानीय स्तर पर विनिमय सम्बन्ध होते हों, अथवा क्षेत्रीय राष्ट्रीय या अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर सभी का उद्देश्य समाज और विभिन्न समाजों में एकीकरण लाना होता है। ब्लॉ का अपना एक ताकतवर तर्क है कि आर्थिक विनिमय लोगों को केवल आर्थिक स्तर पर जोड़ता है। परन्तु सामाजिक विनिमय मित्रता व प्यार के सेतु बनाता है। विनिमय का एक और परिणाम भी होता है और वह यह कि समाज अधि-प्रभुत्व और अधीनस्थ समूहों में बंट जाता है।

(2) विनिमय और आस्था (Trust)

आर्थिक विनिमय व्यक्ति और समूहों के बीच में आस्था पैदा नहीं करते। बाजार में तो रुपया चुकाओ और माल खरीदो या माल बेचो और रुपया लो। यहां सम्पूर्ण विनिमय आर्थिक परिधि में होता है। *सामाजिक विनिमय में इस प्रकार की खरीद फरोख्त नहीं होती। यहां तो विनिमय द्वारा यानि सामाजिक व्यवहार द्वारा खण्ड-खण्ड लोगों को अखण्डता में बांधा जाता है।* ऐसे सामाजिक सम्बन्धों का कोई निश्चित नाप तोल नहीं होता। ये सम्बन्ध छोटे स्वरूप में पैदा होते हैं और धीरे-धीरे विकसित होते जाते हैं। ऐसा इसलिये होता है कि सम्बन्धों द्वारा आभारों को निश्चित नहीं किया जा सकता और न पहले से ही उनकी रूपरेखा बनायी जाती है। सत्य तो यह है कि विनिमय सम्बन्धों के परिणामस्वरूप लोगों में पारस्परिक आस्था बढ़ जाती है। ब्लॉ का आग्रह है कि *यद्यपि विनिमय सम्बन्धों का प्रारम्भ विशुद्ध रूप से व्यक्तियों के स्वार्थ से होता है, लेकिन सामाजिक सम्बन्धों द्वारा धीरे-धीरे ये स्वार्थ ही आस्था में बदल जाते हैं।* अब विनिमय सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्ध या आस्था के सम्बन्ध का रूप ले लेते हैं।

ब्लॉ ने अपने नौकरशाही की आनुभविक अध्ययन से कई आगमन रखे हैं। इनसे यह सिद्ध होता है कि कार्यालय के बाबू जहां तक उनके हितों का प्रश्न है बराबर सामाजिक एकता का दृष्टांत प्रस्तुत करते हैं। जितना अधिक वे कार्यालय के काम के बारे में चर्चा करते हैं, विचार-विमर्श करते हैं, उतना ही अधिक एक-दूसरे के निकट आते हैं। ये कार्यालय सम्बन्ध लम्बी अवधि में जाकर निजी सम्बन्ध का रूप ले लेते हैं।

(3) सामाजिक विभाजीकरण (Differentiation)

जब हम विनिमय को वृहद् समाज में देखते हैं, तो पाते हैं कि लोगों के बीच में सामाजिक सम्बन्ध उत्तरोत्तर अप्रत्यक्ष होते जाते हैं। बम्बई नगर में खिलौनों का उत्पादन करने वाला व्यक्ति अप्रत्यक्ष रूप से दूर-दराज के गांव के एक बच्चे से जुड़ जाता है। ऐसे समाज में

Scanned with CamScanner

लोगों को लाभ अप्रत्यक्ष रूप से मिलता है। न तो खिलौना खरीदने वाला बच्चा और न उत्पादक एक-दूसरे को जानते हैं। सब बेनाम सम्बन्ध है। ब्लॉ का विश्वास है कि इस तरह के वैयक्तिक विनिमय समाज के नियमों व मूल्यों से संचालित होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि सम्बन्धों का अनुमोदन लोग मानक व मूल्यों द्वारा करते हैं, जब तक विनिमय सम्बन्धों को समाज समरूपता नहीं देता, वैधता नहीं देता, विनिमय से लाभ नहीं पहुंचता। सच में सामाजिक मानक व मूल्य अप्रत्यक्ष रूप से विनिमय सम्बन्धों को प्रतिस्थापित करते हैं।

(4) सामूहिक मूल्यों (Collective Values) का विकास

ज्यों-ज्यों लोग एक-दूसरे के साथ विनिमय सम्बन्ध बढ़ाते हैं, त्यों-त्यों समाज व समूह के मानक व मूल्य सुदृढ़ होते हैं। किसी के जन्म पर बधाई संदेश देना या मृत्यु पर शोक संदेश देना समाज के मानक और मूल्य हैं और जितने अधिक ऐसे अवसरों पर विनिमय सम्बन्ध होंगे उतना ही अधिक इन मानक व मूल्यों का विकास होगा। जब अधिकांश लोग मानक और मूल्य से प्रेरित होकर विनिमय सम्बन्ध रखते हैं तो इससे लोगों के व्यवहार में विवेकशीलता भी आ जाती है।

(5) विनिमय और शक्ति (Power)

ब्लॉ की एक पुस्तक का शीर्षक *एक्सचेंज एण्ड पावर इन सोशल लाइफ* है। इस शीर्षक द्वारा यह बहुत स्पष्ट है कि विनिमय सम्बन्धों में ब्लॉ शक्ति की भूमिका पर बहुत अधिक ज़ोर देते हैं। वास्तव में शक्ति की अवधारणा का बहुत सफलतापूर्वक ब्लॉ ने विनिमय के संदर्भ में किया है। वे यह मानते हैं कि जब मूल्यवान सेवाओं को दूसरों के लिये दिया जाता है तो ऐसे व्यवहार में शक्ति का जन्म होता हैं। ब्लॉ के अनुसार शक्ति में दो निश्चित ताकत हैं। पहली ताकत तो यह है कि दूसरा व्यक्ति दी गयी मूल्यवान सेवाओं पर निर्भर हो जाता है। यह बहुत बड़ी बात है। इस ताकत की दूसरी विशेषता यह है कि यह सेवाएं देने के अतिरिक्त समाज में सुदृढ़ता भी स्थापित करती है।

होमन्स ने भी शक्ति की चर्चा की है, लेकिन वे समाज पर पड़ने वाले परिणाम को अनदेखा कर देते हैं। दूसरी ओर, ब्लॉ का तर्क है कि *विनिमय सम्बन्धों की कोख में गैर-बराबरी होती* है। होता यह है कि वह व्यक्ति या समूह जो मूल्यवान सेवाओं को देता है किसी न किसी तरह की शक्ति को अपने पास रखता है। और वे व्यक्ति और समूह इस शक्ति के बिना अपना काम नहीं चला सकते। उदाहरण के लिये जब मालिक रोजगार देता है तो यह उसकी शक्ति है, उसके पास कल-कारखाने हैं, पूंजी है और इस रोजगार के बिना श्रमिक का काम नहीं चल सकता। ऐसी स्थिति में मालिक और कर्मचारी के विनिमय सम्बन्ध शक्ति द्वारा संचालित होते हैं।

जब ब्लॉ सामाजिक गैर-बराबरी को शक्ति के संदर्भ में देखते हैं तो उनका प्राय: मतलब आर्थिक शक्ति से होता है। वे सम्पूर्ण समाज को शक्ति विनिमय के संदर्श में देखते हैं

Scanned with CamScanner

लेकिन इस तरह की शक्ति जो समाज का मानक व मूल्य है तब तक बेअसर है, जब तक कि समाज उसे वैधता नहीं देता। लेकिन शक्ति केवल आर्थिक ही नहीं होती। इसका एक और आधार *आभार* (Obligation) भी होते हैं जिनकी बुनियाद समाज के मानक एवं मूल्य होते हैं। ब्लॉ का यह उपागम न तो आर्थिक उपागम से जुड़ा है और न यह किसी तरह से संघर्ष व प्रकार्यवादी विश्लेषणों से मेल खाता है। मार्शल मॉस ने विनिमय सिद्धान्त को देते हुये एक प्राक्कल्पना रखी थी। इसमें उन्होंने कहा कि *विनिमय का कारण व्यक्तियों में ऊंची से ऊंची प्रतिष्ठा पाना होता है। प्रतिष्ठा पाने के लिये वह बराबर आकर्षक भेंट प्रस्तुत करता है। और समान प्रतिष्ठा पाने की प्रतियोगिता में भेंट की एक बाढ़ सी आ जाती है। और इस तरह पारस्परिक आभार का सिलसिला शुरू हो जाता है। होता यह है कि सामाजिक विनिमय में जब पारस्परिक भेंट संस्थागत रूप ले लेती है तब उसकी वैधता स्थापित हो जाती है और प्रतिष्ठा में होड़ करने वाले व्यक्तियों की शक्ति प्राधिकार हो जाती है। जब विनिमय व्यवहार प्राधिकार का रूप ले लेता है तब समाज के सदस्यों के लिये इसे मानना अनिवार्य हो जाता है। दूसरे शब्दों में विनिमय द्वारा समूह कुछ मानकों को विकसित करते हैं और फिर ये मानक सदस्यों को बाध्य कर देते हैं कि वे अमुक प्रकार के विनिमय को अवश्य करें।*

शक्ति के सांस्कृतिक संदर्श को हम एक दृष्टान्त द्वारा प्रस्तुत करेंगे। हमारे देश में ही लें। एक जाति में अधिकतम प्रतिष्ठा पाने की होड़ में कुछ व्यक्ति विवाह पर हजारों-लाखों रुपया खर्च कर देते हैं। धीरे-धीरे विवाह का बढ़ा-चढ़ा खर्च जाति के ऊंचे वर्ग के लिये एक स्थापित मानक का रूप ले लेता है। इस तरह के खर्च को लोग प्रतिष्ठा पाने का आदर्श मानने लगते हैं और इसे पूरी वैधता देते हैं। इस भांति विवाह से सम्बद्ध विनिमय व्यवहार अधिकतम प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक साधन बन जाता है। ऐसे व्यवहार की लागत तो ऊंची है, लेकिन इससे मिलने वाली प्रतिष्ठा भी कोई कम नहीं है। शक्ति का प्रभाव यहीं समाप्त नहीं होता। जब विनिमय द्वारा अधिकतम लाभ लिया जाता है, तब इस प्रकार के व्यवहार का विचारधारा के आधार पर विरोध किया जाता है। प्रतिष्ठा के लिये प्रतियोगिता और उसी के समानान्तर वैचारिकी विरोध बराबर चलते हैं। जब अधीनस्थ समूह को ऐसा विश्वास होने लगता है कि उच्च वर्ग शक्ति का दुरूपयोग करके अपनी प्रतिष्ठा को ऊंचा उठाना चाहता है तो वे इसका डट कर मुकाबला भी करते हैं। शादी के अनाप शनाप खर्च को रोकने के लिये सुधार आन्दोलन भी चलाये जाते हैं। दहेज नहीं देना चाहिये, असंख्य लोगों को भोज पर नहीं बुलाना चाहिये, सीधे-सादे, समारोह में विवाह होना चाहिये इत्यादि। इस तरह का विरोध आन्दोलनों के रूप में देखने को मिलता है। शक्ति सम्बन्धों का यह गैर-आर्थिक विनिमय है और इसे पीटर ब्लॉ ने पर्याप्त रूप से रखा है।

उपसंहार

समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों की वीथिका में कई सिद्धान्त हैं। आये दिन इसके तरकस में नये-नये तीर सम्मिलित हो रहे हैं। लेकिन यह निश्चित है कि *जहां तक छोटे समूह में*

Scanned with CamScanner

व्यक्तियों के व्यवहार का प्रश्न है, विनिमय सिद्धान्त का योगदान अद्वितीय है। निश्चित रूप से इस सिद्धान्त को वृहद् समाज और संस्थाओं के विश्लेषण में इस तरह की सफलता नहीं मिली है। क्या इसका यह मतलब हुआ कि विनिमय सिद्धान्त बुनियादी तरह से छोटे समूहों के विश्लेषण का सिद्धान्त है? कम से कम पीटर ब्लॉ ने तो यह स्वीकार किया है कि व्यक्तियों के रूबरू होने वाले विनिमय सम्बन्धों के अध्ययन में यह सिद्धान्त अनिवार्य रूप से बहुत उपयुक्त है। ब्लॉ मूल में विनिमय सिद्धान्त को सामाजिक संरचना के संदर्भ में देखते हैं। इसका यह अर्थ हुआ कि विनिमय सिद्धान्त सामाजिक संरचना के साथ जुड़ा हुआ है। अपने विनिमय में व्यक्ति जिस प्रकार के आदान-प्रदान करते हैं, उन्हें समाज ही वैधता देता है। इस अर्थ में विनिमय सम्बन्धों की निरन्तरता बनाये रखने का काम व्यक्ति का नहीं समाज का है और यही सब कुछ पीटर ब्लॉ ने अपने सिद्धान्त में कहा है।

Scanned with CamScanner